आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2436 • उदयपुर, बुधवार 25 अगस्त, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

उमेश की दो साल से रुकी जिन्दगी शुरु

चोरी–चोरा, गोरखपुर (यू.पी.) निवासी 27 वर्षीय उमेश कुमार राजभर करीब 2 साल पहले एक रेल दुर्घटना के शिकार हो गए। दुर्घटना का जिक्र करते हुए वे रूंधे गले से बताते हैं कि मां–पिता की मौत तो मेरे लड़कपन में हो गई थी। खैर, ईश्वर की मर्जी के आगे किसी की नहीं चलती। भाभी और भाई ने मुझे बड़ा कर किया। परिवार की मदद के लिए लोहे के कारखाने में मजदूरी करने लगा। घरवालों से मिलने के लिए गांव जा रहा था कि चलती ट्रेन में चढ़ते वक्त गिर पड़ा। मुझे तो कुछ सुध नहीं रही बांया पांव पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था। किसी ने मुझे हॉस्पीटल पहुंचाया। वहां करीब 1 माह तक इलाज चला जिसके दौरान घुटने के नीचे से पांव काटना पड़ा। कल तक दौड़ रही जिन्दगी एकाएक थम गई। बेड पर बैठे रहने के सिवा कुछ भी नहीं कर सकता। कुछ दिन पहले किसी परिचित ने नारायण सेवा संस्थान की जानकारी दी तो मैं उदयपुर पहुंचा। संस्थान की प्रोस्थेटिक टीम ने कटे पांव का मेजरमेंट लिया और कृत्रिम पांव लगा दिया। अब मैं अपने पांवों पर चलने लगा हूं। मैं इतना खुश हूं कि कह नहीं पा रहा .... बस इतना ही कहूंगा कि मेरी जिन्दगी रूक गई थी जिसे फिर से शुरू करने वाली नारायण सेवा संस्थान और इनके डॉक्टर्स व टीम को बहुत धन्यवाद... आपने कृत्रिम अंग का मुझे उपहार दिया है ... मैं इसके लिए बहुत आभारी रहूंगा....

पाली (राज.) में 45 दिव्यांगों के कृत्रिम हाथ–पैर लगाए

कन्यादेवी पत्नी घेवरचंद जी बोहरा की याद में बोहरा परिवार द्वारा रोटरी भवन में निःशुल्क दिव्यांग जांच एवं ऑपरेशन चयन शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का नेतृत्व महावीर इंटरनेशनल महिला विंग और नारायण सेवा संस्थान उदयपुर द्वारा किया गया। महिला विंग की चेयरमेन ललिता जी कोठारी और संस्था के जोन चेयरमेन तेजपाल जी जैन ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ संरक्षक राजेन्द्र जी भंडारी, सुमित्रा जी जैन, भामाशाह मोतीलाल जी जैन, प्रकाशचंद जी, राजेश जी बोहरा एवं डॉ. बंशीलाल जी शिन्दे द्वारा किया गया। महिला विंग की सदस्यों द्वारा महावीर प्रार्थना का पठन किया गया। शिविर में जिले भर से 45 दिव्यांगों के हाथ–पैर इत्यादि का माप लिया गया। साथ ही जरूरतमंद दिव्यांगों को कैलिपर्स वितरित किए गए।

शिविर के लाभार्थी मुकेश जी बोहरा, राजेश जी बोहरा तथा संयोजक कांतिलाल जी मूथा, संरक्षक नूतनबाला जी कपिला, प्रभारी पुनीत जी मूथा, डॉ. के. एम. शर्मा जी, बाबू बंबोली जी, सुशील जी बालिया, आदित्य जी मूथा, सचिव प्रियंका जी मुथा, खुशबू जी मेहता, अभिलाषा जी संकलेचा, स्वीटी जी कोठारी, भारती जी मेहता, संगीता जी मेहता, सुरभि जी कोठारी, मनाली जी बोहरा, चंचल जी बोहरा, रक्षा जी वैष्णव, राज कंवर जी चौहान, नारायण सेवा के भंवरसिंह जी, राहुल जी, हरिप्रसाद जी लढ्ढा, मुकेश जी, मोहन जी, भरत जी, जयप्रकाश जी आरोड़ा, पुष्पा जी परिहार, अंजु जी भंडारी, पीयूष जी गोगड़ आदि ने अपनी सेवाएं दी। महावीर रसोई गृह के माध्यम से दिव्यांगों के लिए व्यवस्था की गई तथा रोटरी अध्यक्ष अमरचंद जी बोहरा द्वारा निःशुल्क भवन उपलब्ध करवाया गया। अंत में सरंक्षक राजेंद्र जी भंडारी ने कार्यकर्ताओं एवं दिव्यांगों का आभार व्यक्त किया।

महिलाओं को सामाजिक कार्य में लाएंगे आगे– ललिता जी कोठारी

महिला विंग की चेयरमेन ललिता जी कोठारी ने इस मौके पर कार्यकर्ताओं व प्रबुद्ध नागरिकों को संबोधित करते हुए कहा कि महावीर इंटरनेशनल द्वारा कार्यकर्ताओं को आगे लाने के लिए इस विंग की स्थापना की गई। इसके लिए सदस्यता अभियान चलाकर शहर में सक्रिय महिलाओं को इस संगठन से जोड़ेंगे और ऐसे शिविर और आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने शिविर के लाभार्थी भामाशाह बोहरा परिवार भांवरी वालों को भी साधुवाद दिया।

चेगलपट्टु (तमिलनाडु) में राशन–सेवा

नारायण सेवा संस्थान यों तो दिव्यांगता मुक्ति अभियान में प्रमुख रूप से सेवारत है किंतु कोरोना काल में जरूरतमंदों के लिये विविध प्रकार की सेवा में अग्रणी रहा है। आप सभी के आशीर्वाद से देशभर के करीब 50 हजार परिवारों को राशन–सामग्री प्रदान करने का सौभाग्य पाया है।

यह प्रक्रिया अनवरत जारी है। ऐसा ही एक राशन वितरण शिविर नारायण गरीब परिवार राशन–योजना के अंतर्गत तमिलनाडु प्रांत के चेगलपट्टु नगर में 30 जून 2021 को आयोजित किया गया।

नारायण सेवा संस्थान की इस शाखा द्वारा कुल 104 परिवारों को राशन–किट प्रदान किये गयें। शिविर प्रभारी लालसिंह जी भाटी के अनुसार इस कार्यक्रम में जो अतिथिगण पधारे उनके शुभनाम निम्नलिखित हैं– श्री शिवकुमार जी (बी.डी.ओ., मदुरंतकम ब्लोक), श्री मुरली जी (सब इंस्पेक्टर पुलिस पडालम), श्री जी. एस. सुरेश बाबू (शासकीय वकील), श्री मारी मूथा (सेवानिवृत वी. ए. ओ.) श्री सत्य सांई, श्री एजीलरासु (सामाजिक कार्यकर्ता), श्री एम. जी. अंबाजगन (निदेशक–जी. वी. एस.) श्री वेंकटेश जी एस. (कोषाध्यक्ष–जी. वी. एस.)। शिविर के लाभार्थी जन अत्यंत प्रसन्न थे।

अब आसानी से चलने लगी तारा और अनुराधा

सॉफ्टवेयर और ऐप द्वारा संस्थान के आर.एल. डिडवानिया पोलियो हॉस्पीटल में पिछले दिनों नई रणनीति के साथ दो जटिल मामलों की सर्जरी की गई। पोलियो करेक्शन के इन दोनों मामलों में पहली सर्जरी के बाद मरीजों को चलने में मदद मिली। जबकि वे पूर्व में बिना सहारे के उठ भी नहीं सकते थे। सॉफ्टवेयर और ऐप के जरिये सर्जरी करने वाले डॉ. अंकित सिंह चौहान के अनुसार दूसरी सर्जरी में टिबीया हड्डी में शेष रही विकृति को ठीक करने व उसे लम्बा कर रोगी की उंचाई बढ़ाने के लिए इलिजारोव विधि का प्रयोग किया गया। इस सर्जरी के अगल दिन से ही दोनों मामलों में मरीजो की फिजियोथेरेपी शुरू कर दी गई।

इन दोनो मामलों में एक उदयपुर (राजस्थान) की 16 वर्षीय तारा डांगी है। बचपन में घुटनों में चोट के कारण यह चलने में काफी दिक्कत महसूस कर रही थी। सर्जरी से पूर्व उनके एक्स–रे में पाया गया कि घुटने की यह विकृति उनकी दोनों डिस्टल फिमर हड्डियों और प्रॉक्सिमल टिबीया हड्डियों में वैल्गास विकृति के कारण थी। ऐसा ही दूसरा मामला चन्दौली (उत्तरप्रदेश) की 20 वर्षीय अनुराधा तिवारी का है। उन्हें सेरेब्रल पाल्सी के साथ डिस्टल फीमर की तीन आयामी विकृतियो थी।

मानवता की भलाई करने के लिए सेवारत होना चाहिए

हर व्यक्ति को मानव मात्र की भलाई के लिए सेवारत होना चाहिए। लेकिन प्रश्न उठता है कि सेवा किसकी? ये प्रश्न जितना सरल लग रहा है उतना ही जटिल है। लौकिक दृष्टि से हम दूसरों की सेवा भले कर लें, किंतु पारमार्थिक क्षेत्र में सबसे बड़ी सेवा अपनी ही हो सकती है। आध्यात्मिक दृष्टि से किसी अन्य की सेवा नही, अपितु स्वयं हम अपनी सेवा करते है। दूसरों का सहारा लेने वाले पर भगवान भी अनुग्रह नही करते। सेवा करने वाला वास्तव में अपनेपन की वेदना मिटाता है। यानी अपनी ही सेवा करता है दूसरों की सेवा में अपनी सुख–शांति की भावना छिपी रहती है। कहा जाता है कि दीन–दुखियों की सेवा करके हम भगवान की सेवा करते हैं लेकिन यह अंतिम सत्य नहीं है। भगवान की सेवा आप क्या कर सकेंगे? वे तो निर्मल और निराकार बन चुके है। उनके समान निर्मल और निराकार बनना ही उनकी सच्ची सेवा है।

हम शरीर की तड़पन तो देखने हैं, किंतु आत्मा की पीड़ा नहीं पहचान पाते। यदि शरीर में कोई रात को सुई चुभो दे, तो तत्काल हमारा पूरा ध्यान उसी स्थान पर केन्द्रित हो जाता है। हमें बड़ी वेदना महसूस होती है, किंतु आत्म–वेदना को आज तक अनुभव नहीं किया। शरीर की सड़ांध का हम इलाज करते है, किंतु अपने अंतर्मन की सराध को, उत्कट दुर्गंध को कभी असह्य माना ही नहीं।

नारायण सेवा के सहयोग से ज्योतित हुआ ज्योति का जीवन

ज्योति दोनों पैरों से दिव्यांग पिछले कई वर्षों से। मुज्फ्फरपुर (बिहार) की। पैरों का ऑपरेशन हाल ही में नारायण सेवा संस्थान के माध्यम में हुआ, जो सफल रहा।

ज्योति को जन्म से चलने फिरने में दिक्कत होती थी खाना–पीना भी कम हो गया। भविष्य को लेकर जब –तब रोती ही रहती थी। शहर के आस पास हॉस्पिटल में भी चेकअप और ऑपरेशन करवाया गया लेकिन असफल रहा ।

ज्योति के पिता शिव कुमार मजदूरी कर पांच हजार रुपए मासिक ही कमा रहे थे। प्रयासों के बावजूद कहीं से कोई मदद भी नहीं मिली। कहते हैं कि हर अंधेरी रात के बाद उजाला सवेरा जरुर आता हैं। ऐसा ही कुछ शिव कुमार के साथ हुआ। जब उन्हें टी.वी के माध्यम से नारायण सेवा संस्थान के सेवा के विभिन्न सेवा प्रकल्पों की जानकारी मिली। उन्होंने उदयपुर आकर संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल से सम्पर्क कर परिवार की विषम परिस्थितियों से उन्हें अवगत करवाया।

संस्थान के डॉक्टर ने ज्योति के दोनो पैरों के ऑपरेशन किया। ज्योति का ऑपरेशन सफल रहा और अब वह खुश है। उसका जीवन ज्योतित हो उठा। परिवार ने संस्थापक पूज्यश्री कैलाश जी 'मानव' व अध्यक्ष श्री प्रशांत भैया जी के प्रति कोटि–कोटि आभार व्यक्त किया है।

Donate via UPI
Google Pay PhonePe paytm
narayanseva@sbi

Bank Name	: State Bank of India
Account Name	: Narayan Seva Sansthan
Account Number	: 31505501196
IFSC Code	: SBIN0011406
Branch	: Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय: 483, 'सेवाधाम' सेवा नगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर (राज.) 313002, भारत

+91 294 662 2222, 266 6666 | +91 7023509999

Website www.narayanseva.org | E-mail : narayanseva.org

Bank Name	: State Bank of India
Account Name	: Narayan Seva Sansthan
Account Number	: 31505501196
IFSC Code	: SBIN0011406
Branch	: Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI
Google Pay PhonePe paytm
narayanseva@sbi

अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय: 483, 'सेवाधाम' सेवा नगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर (राज.) 313002, भारत

+91 294 662 2222, 266 6666 | +91 7023509999

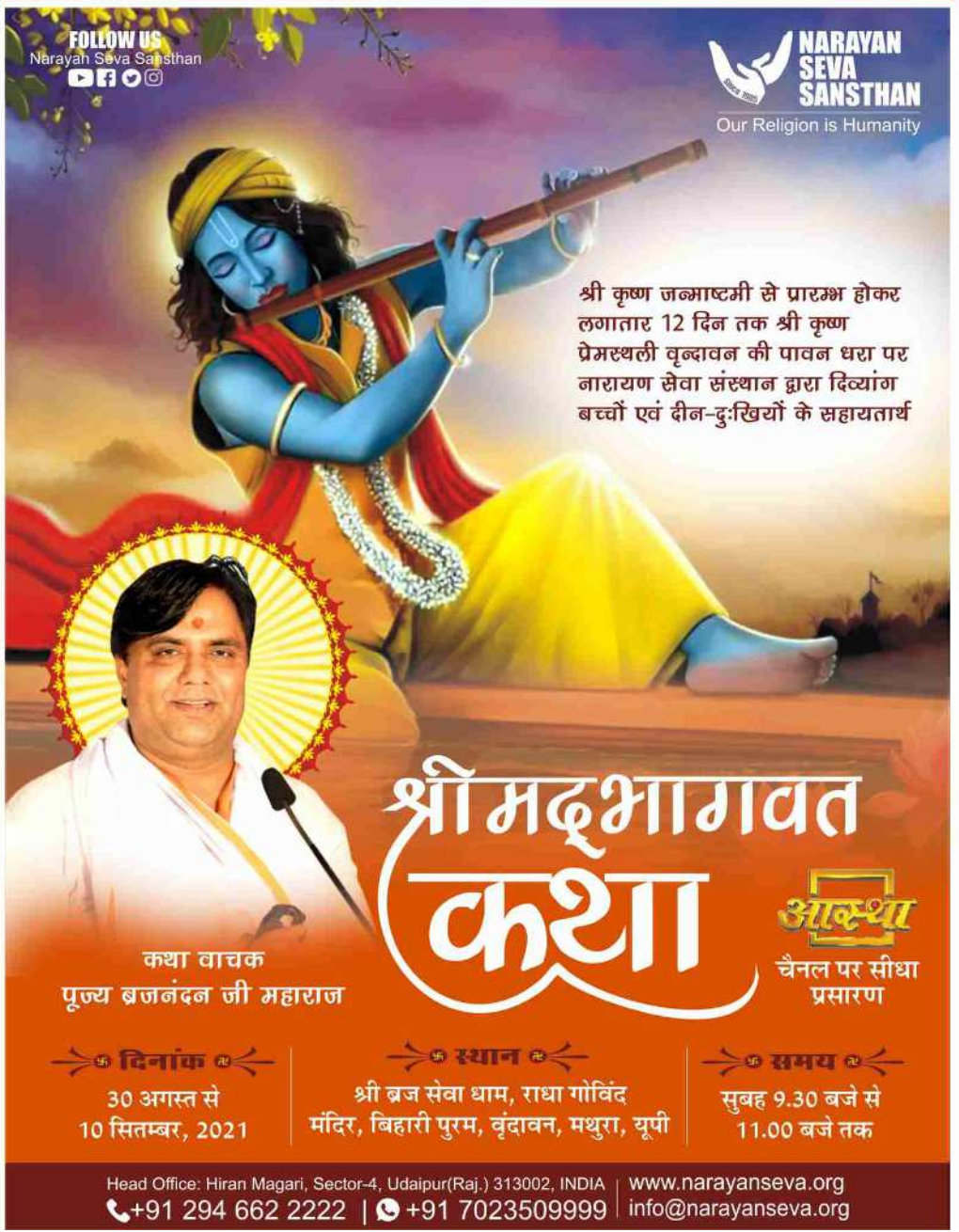

सम्पादकीय

नारी शक्ति किसी भी समाज की आयी संख्यात्मक शक्ति होती है यदि यह आधा भागा समर्थ व सुमर्थ न सुदृढ़ हो सकेगा। आज नारी शक्ति में उसकी जागृत हो रही है। किन्तु जिस माना में उसकी सक्रिय भागीदारी चाहिये। वह दिखाई नहीं दे रही है। स्त्री – पुरूष समानता की भावना को समझों केलिये होके समाज व देश की अलग–अलग परिस्थितियों होती है।

वह स्मरण रखना आवश्यक है। हर जगह एक का नियम, एक ही सोच संभव नहीं है। हमारी सामाजिक संरचना ऐसी नहीं है कि नारी को देवी माना गया है मध्यकाल में नारी का यह दर्जा केवल भोग्या तक सिमट कर रहा गया था। आज फिर भावों में उत्थान आ रहा है और स्त्री – पुरूष समानता का वातावरण बन रहा है। किन्तु न देवी , न भोग्या, न जबरन समानता से लाभ होगा।

लाभ होगा सचमुच की समानता व स्त्रियों को आदर भाव से देखने की वृत्ति के विकास से। आज स्त्रियों भले ही शारिरीक रूप से कमजोर हो सकती है। पर उनकी वैचारिक क्षमता सहनशक्ति सर्जनात्मकता कहीं कम रही है। स्वस्थ्य व समृद्ध समाज के निर्माण में उनकी भूमिका के साथ अब न्याय करने का समय है।

कुछ काव्यमय

दृढ़ता की साधना
परिवर्तन का चक्र सदा,
चलता रहता है।
समय नदी के जल सा,
हरदम बहता है।
इन बदलावों में भी
दृढ़ता सध सकती,
जो निन्दा के वज्र
थपेड़े सहता है।

- वरदीचन्द राव

कोविड-19 के नियम

- भीड़-भाड़ वाली जगहों पर जाने से बचें।
- सार्वजनिक स्थानों पर ना थूकें।
- बार-बार अपने हाथों को धोएं।
- बाहर जाते समय मास्क जरुर लगाऐ।
- अपनी आंख, नाक या मुंह को न छुएं।
- जुकाम और खांसी होने पर मास्क पहनें।
- छींकते समय नाक और मुंह को ढकें।

अपनों से अपनी बात

सेवा के हाथ उठें

बात है संस्था के असहाय सहायता शिविर की। उदयपुर की सुन्दर झीलों की छवि, सुन्दर भवन, बाग–बगीचों की, रमणीय नगरी के समाप्त होते ही मात्र 15 किमी. की दूरी पर सेवा की गाड़ी जा रही थी।

हमेशा की अपने सिर पर 30–40 किलो लकड़ियों का बोझ लिए आदिवासी बालक उम्र लगभग 12–13 वर्ष की, अपने पेट की भूख को मिटाने के लिए शहर की ओर लकड़ियों लिए आ रहा था।

शरीर पर मैल की मोटी परत। बुसर्ट के नाम पर रसोई में पीछे के काम में लिए जाने वाले कपड़े से भी मैली फटी–पुरानी कमीज, नंगे पांवों की दशा में दुर्बल शरीर को संभालते हुए शहर की ओर आ रहा था उसके पतले–पतले कांपते पैरों से यूं लग रहा था जैसे लकड़ी की भारी अब गिरी–अब गिरी। मेरे मुंह से निकला "उफ" कितने जल रहें होंगे इसके –नंगे पैर? तभी पास बैठे एक सज्जन बोल उठे –"इनकी तो

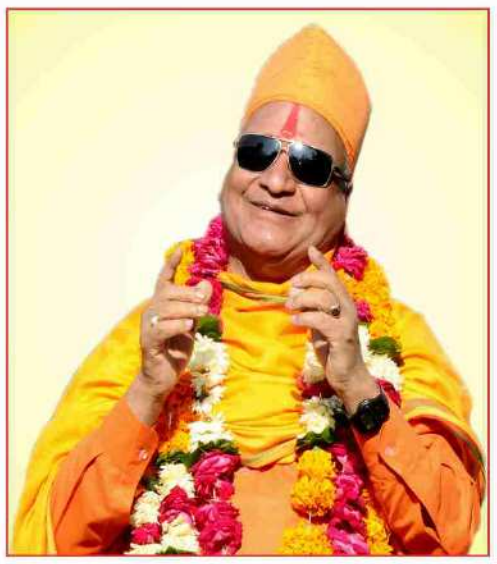

आदत पड़ गई है –दुःख जैसी कोई बात नहीं।"

क्या वास्तव में आदत पड़ गई है? क्या वास्तव में ही इन्हें तकलीफ नहीं होती? नहीं नहीं यह तो इनकी मजबूरी है। शरीर तो इनका भी वैसा ही है –जैसा है हमारा। कांटे तो इनके पैरों में भी वैसे ही चुभते हैं, जैसे बिना बूटों के हमारे। सर्दी–गर्मी , सुख–दुःख, भूख–प्यास की अनुभूति तो इन्हें भी बराबर होती ही है –भाई साहब।

और ध्यान बराबर उस बच्चे पर रहा जब तक वो आँखों से ओझल न हो गया। मन से एक आवाज आई शायद हमारे हृदय की संवेदना ही कहीं खो गई है –हृदय की करुणा ही समाप्त हो चुकी है। अन्तर की रस गगरी खाली हो रहीं हैं।

आइए, भगवत कार्यों से जुड़कर कुछ चिंतन–मनन कर पूछे अपने को कि कहीं हमारे साथ तो यह नहीं हो रहा है? ऐसा कि मन की संवेदना ही शून्य हो जाये। नहीं–नहीं। आप और हम तो ऐसा नहीं होने देंगे। किसी जरूरतमंद गरीब असहाय दुःखी प्राणी को देखकर आपश्री के पांव रूकेंगे–हाथ उठेंगे सेवा के लिए और अंतर से बरसेगा स्नेह ! आइये करुणा सागर प्रभु से करें प्रार्थना–

बंद न कर देना
अपने घर के दरवाजे,
पता नहीं कब कोई
पाहुन घर आये।
रिक्त न कर देना
अंतर की रस गगरी,
पता नहीं कब कोई
प्यासा स्वर आये।

–कैलाश 'मानव'

निर्धन मित्र

एक बार एक अमीर व्यक्ति ने अपने मित्रों को भोजन के लिए न्यौता दिया। दूसरे दिन सभी मित्र अमीर व्यक्ति के घर पहुँच गए। भोजन के बाद उस व्यक्ति को ख्याल आया कि उसकी हीरे जड़ित सोने की अत्यंत मूल्यवान अंगूठी थोड़ी ढीली होने के कारण कहीं गिर गई।

सभी मित्रों ने अंगूठी को बहुत ढूँढा, लेकिन उन्हें अंगूठी कहीं नहीं मिली। तभी एक मित्र ने कहा – आप हम सभी की तलाशी ले सकते हैं, एक आदमी के कारण हम सभी जीवन भर आपकी नजर में शक के दायरे में रहेंगे। इस पर सभी मित्र तलाशी के लिए सहमत हो गए, सिवाय एक निर्धन मित्र के। उसने अपनी तलाशी देने से मना कर दिया।

अन्य सभी मित्रों ने उसे बहुत

भला–बुरा कहा और उसे अपमानित किया। अमीर आदमी ने बिना किसी की तलाशी लिए, सभी को सहजता से विदा कर दिया।

दूसरे दिन सुबह व्यक्ति ने जब अपने कोट की अंदर वाली जेब में हाथ डाला तो, उसे अपनी खोई हुई अंगूठी मिल गई। वह सीधा अपने निर्धन मित्र के घर पहुँचा और अपने मित्रों द्वारा किए गए अपमान के लिए क्षमा माँगी। साथ ही साथ उसने निर्धन मित्र से उसके तलाशी नहीं देने के कारण के बारे में भी पूछा।

इस पर निर्धन मित्र ने बिस्तर पर लेटे, अपने बीमार पुत्र की तरफ इशारा करते हुए कहा–मैं जब आप के यहाँ आ रहा था, तब इसने मिठाई खाने की जिद की थी। आपके यहाँ खाने में मिठाई दिखी, मैंने स्वयं न खाकर वह मिठाई मेरी जेब में रख ली और अगर तलाशी ली जाती तो अंगूठी की ना सही, पर मिठाई की चोरी अवश्य ही पकड़ ली जाती।

इसीलिए अपमान सहना उचित समझा। रात को सब बात बताता तो बेटे का नाम भी आ जाता तथा अपनी परेशानी मैं बताना नहीं चाहता था। अमीर व्यक्ति को पुनः अपने किए पर पछतावा हुआ और उसने ठान लिया कि उसके बेटे का इलाज करवाकर, वह अपनी भूल का प्रायश्चित करेगा।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

उपभोक्ता की शिकायत हर दृष्टि से उचित थी, कैलाश को अपने कार्यालय की सीमाओं का भान था मगर वह भी प्रणाली के समक्ष बेबस था। उसने उसे किसी तरह समझा–बुझा कर शांत करके भेजा।

घर से कार्यालय के बीच दूरी के कारण आने जाने में समय तो नष्ट होता ही था, थकान भी चढ़ जाती थी इसलिये कैलाश सोच रहा था कि कार्यालय के समीप ही अगर कोई मकान मिल जाये तो काफी आराम हो जाये। जगदीश चौक के क्षेत्र में महतों के टिम्बों पर एक मकान कैलाश को पसन्द आया मगर कमला को बिल्कुल नहीं जंचा। यहां गन्दगी बहुत थी तथा हर समय बदबू आती थी, शौचालय भी छिटकमा था इसलिये थोड़े दिन रह कर ये वापस हिरणमगरी आ गये।

एक दिन वह सेन्ट्रल जेल के बाहर से गुजरते हुए टेकरी होकर घर लौट रहा था। जेल के अन्दर से रामचरित मानस की चौपाइयों की गूंज सुनाई दी तो वह ठिठक कर खड़ा हो गया। रामचरितमानस बचपन से ही उसके आकर्षण का केन्द्र रही हैं, थोड़ी देर वह साईकिल रोक कर सुनता रहा, सोच रहा था कि जेल में कैदियों के लिये पाठ चल रहा दिखता है।

उसकी भी अन्दर जाने की इच्छा हुई मगर दरवाजे पर दो बन्दूकधारी सिपाही खड़े थे, ये उसे अन्दर नहीं जाने देंगे फिर भी उसने सोचा कि पूछने में तो कोई हानि है नहीं। उसने डरते–डरते एक सिपाही से पूछ लिया कि क्या वो भी अन्दर जा सकता है?

अंश - 94

मानसून का गुणकारी फल : नाशपाती

नाशपाती की सुंदर रचना से सभी परिचित हैं। यूं तो इनकी कई किस्में बब्बूगोशा, नाख, एवं छोटी–बड़ी नाशपाती हैं, पर गुण सबके प्रायः समान ही हैं। शालीग्राम निघण्टु के अनुसार नाशपाती धातुवर्धक, मधुर, भारी, रूचिकारक, अम्ल, वात नाशक और त्रिदोष को शांत करने वाला है।

प्रायः सभी प्राकृतिक लवण किसी न किसी मात्रा में हैं। इसमें पक्टिन तथा मैलिक एवं साइट्रिक एसिड पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। इन तत्वों के कारण यह पेचिस, दस्त, यकृत एवं प्लीहा वृद्धि एवं गुर्दा तथा पित्ताशय की पथरी में उपयोगी है। नाशपाती गठिया, वात, गुर्दा प्रदाह एवं पेशाब के जलन में भी काम करता है।

नाशपाती जहां खाने में अच्छी लगती है वही इसका जूस कब्ज को खत्म करने वाला है। खीरा के साथ मिलाकर पीने से रूचिकर होता है। हल्का खट्टा होने के कारण बच्चों को अत्यंत प्रिय होता है।

मानसून का गुणकारी फल : आड़ू

आड़ू एक उपयोगी फल है। यह स्पंजी होता है एवं इसमें जल तथा पोटाश प्रचुर मात्रा में पाया जाता है अतः यह फल प्यास, जवर एवं मूत्र के अभाव में उपयोगी है। छिलका समेत खाने से कब्ज एवं मूत्राशय की पथरी दूर करता है। यह स्कर्वी विरोधी एवं नियमित प्रयोग कृमि उत्पन्न होने से रोकता है।

पत्तियों का स्वरस खाली पेट 40–50 ग्राम कुछ दिन लगातार देने से उदर कृमिजन्य रोगों में मुक्ति मिलती है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

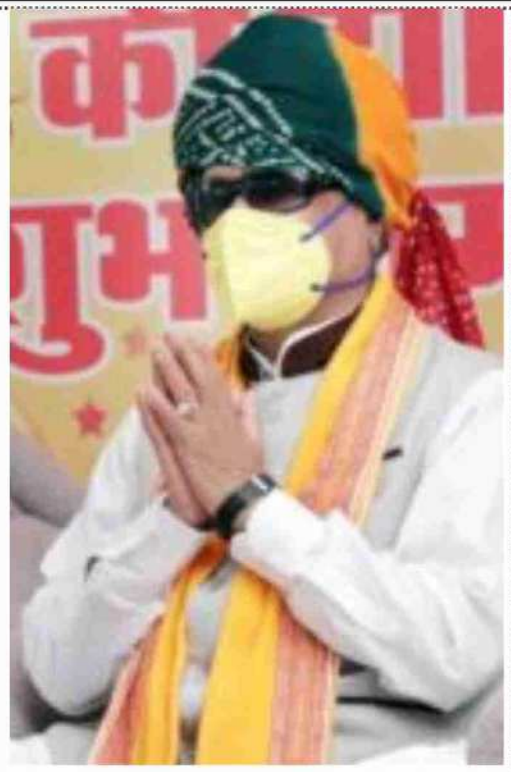

हर आँख यहाँ
यूं तो बहुत रोती है,
हर बूंद मगर
अश्क नहीं होती है।
देख कर रो दे
जो जमाने का गम,
उस आँख से आँसू
गिरे वह मोती है।।

दो बूंद अश्रुओं ने बहुत कुछ बोल दिया। कितना बोलेंगे, कब तक बोलेंगे, ये शक्ति कब तक रहेगी? रतनलालजी डिडवानिया साहब महान संत पुरुष। बड़े उद्योगपति, बहुत सम्पन्नता, लेकिन दिल बसता है गरीबों में । उनके बारे में आगे भी निवेदन करूंगा, परन्तु उनके भी बोलने की शक्ति चली गयी थी। आधा अंग रह गया था। बोलने की शक्ति चली गयी थी। सिरोही कमल किशोरजी गुप्ता, हमारे आदरणीय रमेश जी गुप्तासाहब ससुराल पक्ष में कमलाजी के मामाजी उनके बेटे वो भी आते थे सिरोही में रामचरितमानस पढ़ा करते थे। रामचरितमानस परम् आनंद के साथ में और भेरूसिंहजी राजपुरोहित साहब गायत्री भक्त, आचार्य श्रीराम शर्मा वेद मूर्ति पण्डित तपोनिष्ठ शांतीकुंज हरिद्वार के भक्त, गायत्री के भक्त उनके सत्संग से तपोभूमि मथुरा में पचास रुपये का मनीआर्डर भेजा। वहाँ से सद्वाक्यों का पैकेट आ गया। करीबन डेढ़ सौ सद्वाक्य ए फोर साईज में। सुखद पहलु जय सियाराम, शुभकामना परिवार– भैया धन्यवाद।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 221 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023